मेघीराजा

Meghiraja

एक था मेघीराजा। भारीभरकम, मोटा-ताजा और मनमौजी। जब चाहता तब उड़ते हुए बादलों को पकड़कर हथेली में दबोच लेता और झर-झर पानी बरसने लगता।

गहरे जंगलों के उस पार गिल्लीराजा का राज्य था। मेघीराजा को गिल्लीराजा के साथ छेड़खानी करने में बड़ा मज़ा आता था।

एक बार मौज में आकर मेघीराजा ने गिल्लीराजा की दाढ़ी-मूंछ काट ली, और आसमान में उड़ गया। फिर एक और रोज गिल्लीराजा की लड़की के साथ खेलते-खेलते उसकी चोटी काट ली।

मेघीराजा की इन करतूतों से गिल्लीराजा बहुत नाराज़ हुआ। उसने अपनी फौज़ को आज्ञा दी कि मेघीराजा को कैद कर लें। आज्ञाकारी फौज़ ने मेघीराजा को कैद कर लिया।

मेघीराजा को जब गिल्लीराजा के सामने लाया गया तो गिल्लीराजा ने गुस्से में आकर उसे मंगल बनिये के पास भेज दिया। गिल्लीराजा ने सोचा वह उसे अच्छा मज़ा चखायेगा।

मंगल बनिये ने मेघीराजा को अपने नमक के गोदाम में बन्द कर दिया। मेघीराजा भी कम नहीं था। गोदाम में आते ही उसने पानी-ही-पानी कर दिया। मेघीराजा बादलों का जो बना था। गोदाम से पानी बाहर निकलने लगा और मंगल बनिये के घर में भरने लगा। मंगल बनिया घबराया और राजा के पास गया।

तब गिल्लीराजा ने मेघीराजा को नमक के गोदाम से निकालकर कुम्हार के हवाले कर दिया। कुम्हार ने उसे गरम-गरम भट्टी में बन्द कर दिया। पर मेघीराजा ने वहां भी पानी-ही-पानी कर दिया। आग पर पानी की धार गिरी तो धुआं ही धुआं

Once there was a king of the clouds named Meghiraja. He was fat and fun-loving. Whenever it caught his fancy, he would squeeze the passing clouds with his palm and rain would come pouring down.

Beyond the other side of the deep forest lay the kingdom of Gilliraja.

Meghiraja enjoyed teasing Gilliraja.

One day he playfully cut off Gilliraja's beard and floated away in the sky.

Another day he chopped off the braids of Gilliraja's daughter.

These mischievious deeds of Meghiraja annoyed Gilliraja very much.

He ordered his forces to capture Meghiraja. The obedient forces overpowered Meghiraja at once and brought him before Gilliraja.

In the fit of rage Gilliraja sent Meghiraja to Mangal, the trader, thinking that Mangal would bring him to book.

Mangal, locked up Meghiraja in his salt-godown. Meghiraja, the king of clouds, was not to be out smarted, he turned himself into water and ruined the salt. The water flowed out of the godown into Mangal's house. Mangal got worried and went to Gilliraja.

Then, Gilliraja took out Meghiraja from the salt-godown and handed him over to the Potter. The Potter put him in the hot furnace and shut him up. But, here again Meghiraja turned to water. The moment water came into contact with fire there was smoke everywhere.

हो गया।

मेघीराजा के कारनामे सुन कर गिल्लीराजा को और भी गुस्सा आया। उसने सेनापति को आदेश दिया कि मेघीराजा को राम-लक्ष्मण पहलवानों के हवाले कर दें।

आज्ञाकारी राम-लक्ष्मण पहलवानों ने पहले तो मेघीराजा को खूब पीटा और फिर बारहसिंगा के सींग में बन्दी बना दिया। मेघीराजा वहां कई दिनों तक पड़ा रहा। किसी को कानोंकान खबर नहीं हुई। मेघीराजा के इस तरह गायब हो जाने से बारिश नहीं हुई। नदी-नाले सूख गये। सब जगह हाहाकार होने लगा। अकाल पड़ गया। अनाज की कमी हो गई। लोग मरने लगे।

यह सब देख कर गिल्लीराजा को बहुत चिन्ता होने लगी। वह कहां से वर्षा लाये? उसके हाथ में क्या था, जो अकाल मिटाता। आखिर हार कर गिल्लीराजा बारहसिंगा के पास पहुँचा, जहां मेघीराजा कैद था। उसके सींगों को हिला कर बोला–

''मेघीराजा, सो रहे हो या जाग रहे हो।''

''न मैं सो रहा हूँ न जाग रहा हूँ'' – भीतर से मेघीराजा बोला।

''तो फिर बाहर आओ।''

''बिल्कुल नहीं।''

''क्यों?''

''मेरी मर्जी।''

''क्या रूठ गये हो?''

''हां।''

''क्या चाहते हो?''

''सबकी खुशी।''

''वो तो तुम्हीं दे सकते हो।''

और मेघीराजा हंसता हुआ बाहर आ गया। तभी बादल गरजे। मेघीराजा ज़ोर से हंसा और खुल कर वर्षा होने लगी। नदी-नाले भर गये। सूखी ज़मीन गीली हो गई। लोगों के चेहरे पर मुस्कान आ गई।गिल्लीराजा बहुत खुश हुआ और बोला: प्रकृति और मानव में प्रेम हो तो आनन्द ही आनन्द होगा।

When this news of Meghiraja's deeds reached Gilliraja's ears, he was enraged and ordered his forces to take Meghiraja to Ram-Lakshman, the wrestlers.

The obedient wrestlers gave Meghiraja a sound beating and put him into the horns of a Barasingha.

Meghiraja lay there in captivity for days and no one came to know about it.

The absence of Meghiraja led to drought in Gilliraja's kingdom. For a long time there was no rain. The rivers dried up and there was panic everywhere. The shadow of famine hovered over the land. People began to die.

Seeing the miserable condition of the land and the people, Gilliraja got worried. From where shall we get the rain? he wondered. What could he do to avert disaster?

The defeated Gilliraja finally went to the Barasingha in whose horns Meghiraja was held captive.

Gilliraja shook the horns and said -

"Meghiraja are you sleeping or awake?" "I am neither sleeping nor awake," replied Meghiraja.

"Will you come out of the horns?"

"No not at all."

"Why?"

"My wish."

"Are you displeased?"

"Yes."

"What do you want?"

"Everyone's happiness."

"That you alone can bring."

Hearing this Meghiraja roared with laughter and came out of the horns. Instantly, there was thunder and lightening and rains came pouring down bringing back a smile on every one's face.

Gilliraja was overjoyed and said, "Man can be happy only if he lives in harmony with nature."

महानिदेशक, सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
15-ए, सेक्टर 7, द्वारका,
नई दिल्ली - 110075 द्वारा प्रकाशित

अरावली प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,
डब्लू - 30, ओखला इन्डिस्ट्रयल एरिया, फेस 2,
नई दिल्ली-110 020 द्वारा मुद्रित

Published by Director General
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector 7, Dwarka,
New Delhi - 110075

Printed at
Aravali Printers & Publishers (P.) Ltd.
W-30, Okhla Industrial Area, Phase - 2
New Delhi - 110020

चित्र व आलेख : विजय परमार
Illustrations and text : Vijay Parmar